के ऊपर लदा यह एक भारी खर्च है, जबकि देश में न्यूनतम मजदूरी प्रतिदिन 4 डालर है, देश में प्रति पांच बच्चों में चार बच्चे कुपोषण के शिकार है और अधिकांश नौजवानों सामने शिक्षा पाने की कोई उम्मीद नहीं है। एक मांग यह है कि यूनाम की प्रवेश परीक्षा बाहरी फर्मों से न करायी जाए। इसके साथ ही, हड़ताली छात्रों ने अपने घोषणापत्र में बिजली उद्योग के निजीकरण के प्रस्ताव को वापस लेने की भी मांग की है, उन्होंने बिजली कर्मचारियों से भी हड़ताल में शामिल होने की अपील की।

यूनाम के छात्रों के इस संघर्ष से बौखलाकर मेक्सिको के शासक वर्ग ने छात्रों पर अतिवादी और दुराग्रही होने का आरोप लगाया। जिसके जवाब में संघर्षरत छात्रों ने कहा कि, **''हम मेहनतकशों के बेटे-बेटियों को वे दुराग्रही कह रहें हैं,क्योंकि हम हर एक के अधिकर की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। यदि ऐसा करना दुराग्रह है, तो ठीक है, हम दुराग्रही हैं।''**

मेक्सिकों के शासक वर्ग ने अभी तो शिक्षा के निजीकरण करने की शुरुआत भर की है। मगर शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ ही आधारभूत उद्योगों-बिजली, सड़क आदि का निजीकरण तेज गति से हो रहा है। साम्राज्यवाद के साये में आई.एम.एफ. व विश्व बैंक की शर्तों को लागू कर भूमण्डलीकरण की नीतियों के तहत निजीकरण-उदारीकरण किया जा रहा है, जिससे कुछ सीमित हाथों में पूंजी का संकेन्द्रण और बाकी भारी आबादी का कंगालीकरण हो रहा है। मेक्सिको की लगभग 90 प्रतिशत आबादी का जीवन स्तर गिरता जा रहा है, महंगाई-बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है पूरा का पूरा मेक्सिकन समाज भयंकर उथल-पुथल का शिकार है। जगह-जगह विरोध, प्रदर्शन हो रहे हैं। किसान, मजूदर, कर्मचारी सभी मेहनतकश वर्ग अपने हकों की लड़ाई के लिए सड़कों पर उतर रहे हैं। यूनाम के छात्रों का वर्तमान आन्दोलन तथा अन्य मेहनतकश वर्गों से उसको मिल रहा सहयोग-समर्थन, मेक्सिको में गहराते आर्थिक संकट के खिलाफ आम आबादी के बढ़ते असंतोष और उससे मुक्ति की छटपटाहट

अपने हक-हूकूक के लिए
ईरान के छात्रों ने भी आवाज बुलन्द की

जहां जुल्म है, वहां इन्साफ की लड़ाई भी है। इस हकीकत को ईरान के बगावती छात्रों ने पिछले साल जुलाई में हुए जबर्दस्त आन्दोलन में चरितार्थ कर दिया। विद्रोही छात्रों ने बेरोजगार नौजवानों और आम लोगों के साथ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर पुलिस तथा सरकार से लड़ाई लड़ी। छात्रों का यह विद्रोह इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के शासक वर्गों की नीतियों के खिलाफ संघर्ष के रूप में सामने आया।

8 जुलाई 1999 को शुरू होकर छह दिनों तक चला छात्रों का यह आन्दोलन तेहरान विश्वविद्यालय से शहर की सड़कों पर और फिर देश के अन्य भागों में भी फैल गया। बगावती छात्र 'सलाम' अखबार की बन्दी और प्रेस की सेंसरशिप के खिलाफ-विशेष रूप से आक्रोश में थे। लेकिन उनकी बगावत उनके दिलों में सुलगते गुस्से और ईरान के आम अवाम के असंतोष को जाहिर करती है। भयंकर गरीबी और बेरोजगारी से ईरान के सिर्फ सबसे गरीब तबके ही नहीं, बल्कि मध यवर्ग भी परेशान हाल है। कठमुल्ला शासकों और उनके धार्मिक कानूनों के दमनकारी शासन से, भारी आबादी कुपोषण और भुखमरी की शिकार है। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान की नारी विरोधी विचारधारा और मध्युगीन पितृसत्तात्मकता के खिलाफ महिलाएं भी बगावत कर रही हैं।

8 जुलाई को तेहरान विश्वविद्यालय के लगभग 200 छात्रों ने अपनी मांगों के समर्थन में शांतिपूर्वक प्रदर्शन किया। अधिकारियों ने उनकी मांगों के सम्बन्ध में कोई प्रतिक्रिया नहीं की, बल्कि उल्टे 9 जुलाई की सुबह दंगारोधी पुलिस (दंगाई पुलिस) ने प्रदर्शनकारी छात्रों के ऊपर बर्बरतापूर्वक हमला कर कुछ छात्रों की हत्या कर दी तथा बहुतों को गिरफ्तार कर लिया। इस बर्बर हमले ने कैम्पस के सारे छात्रों को सड़कों पर उतरने के लिए उत्तेजित कर दिया। इससे घबराकर ईरान के उच्चाधिकारियों ने सुरक्षात्मक रुख अख्तियार कर लिया। राष्ट्रपति खतामी और ईरान के 'सुप्रीम लीडर' अयातुल्ला खमेनी ने घड़ियाली आंसू बहाते हुए छात्रों के आन्दोलन को समर्थन देने की घोषणा और पुलिस द्वारा छात्रों पर बर्बरतापूर्वक हमला करने की भर्त्सना की। लेकिन ईरान के बगावती छात्र शासकों की घड़ियाली आंसुओं के पीछे छिपी असलियत को समझ चुके थे, वे इन बातों के भुलावे में नहीं आये।

12 जुलाई को तेहरान विश्वविद्यालय में प्रदर्शनकारी छात्रों की पुलिस से झड़पें हुईं और शहर में अन्य जगहों पर भी। ईरान के अन्य मुख्य शहरों में आन्दोलन के फैल जाने से इसमें महत्वपूर्ण इजाफा हुआ। तेहरान के छात्रों से प्रेरणा लेकर, 11 जुलाई को तबरिज के छात्र भी अन्य लोगों के साथ सड़कों पर उतर पड़े। अब, ईरान के शासक पैंतरा बदलकर छात्रों के आन्दोलन के समर्थन देने के अपने बयान से मुकर गये और छात्रों को ''डाकू'' तथा ''विध्वंसकारी'' बताते हुए उन्हें देश की ''राष्ट्रीय सुरक्षा'' के लिए खतरा बताने लगे। उच्चाधिकारियों ने लोगों को 'और प्रदर्शन न करने' की चेतावनी दी। पाबंदी को चुनौती देते हुए भारी संख्या में छात्र तेहरान विश्वविद्यालय के सामने इकठ्ठा हुए – और आम लोगों ने उनका साथ दिया। दोपहर में दंगाई पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। बहुत से छात्र जख्मी हुए और गिरफ्तार कर लिये गये। लेकिन

(अगले पृष्ठ पर जारी)

देश के अन्य हिस्सों में भी यह विद्रोह फैल गया।

क्रुद्ध ईरानी छात्र गृह मंत्रालय का गेट तोड़कर भीतर घुसते हुए

बीस साल पहले, अमेरिकी साम्राज्यवाद के कठपुतली शाह के खिलाफ ईरान की जनता ने बगावत की थी और उस महान संघर्ष का फायदा उठाकर प्रतिक्रियावादी ताकतें सत्तासीन हो गयी थीं। हाल के विद्रोह वर्षों से ईरानी जनता के दिलों में जज्ब अपने हक-हूकूक हासिल करने की चाहत को बताते हैं जिसके लिए उन्होंने अपनी आवाज बुलन्द की है।

ईरान के मेहनतकशों की इंकलाबी पार्टी सरबेदरान (यूनियन ऑफ कम्युनिस्ट्स ऑफ ईरान) ने छात्रों के इस आन्दोलन के बारे में कहा कि 'छह दिनों में आम जनता ने राजनीतिक पाठ सीख लिया है।' इस आन्दोलन की एक मुख्य कमी यह रही कि छात्रों ने कोई मुख्य नारा नहीं दिया और महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज नहीं उठायी। छात्राओं ने इस आन्दोलन में बड़ी तादाद में हिस्सा नहीं लिया, जबकि विश्वविद्यालय में उनकी तादाद करीब 40 प्रतिशत है।

ईरान के छात्रों के इस आन्दोलन में अन्दरूनी संघर्ष भी चलते रहे। संघर्ष इस बात पर था कि आन्दोलन को कैम्पस में ही चलाकर राष्ट्रपति खतामी से कुछ सुधारों की मांग की जाए या समूची शासन-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष किया जाए। यह एक महत्वपूर्ण बिन्दु था, क्योंकि ईरान के छात्र आन्दोलन के इतिहास में आन्दोलन को कैम्पस में सीमित रखने और व्यापक आम अवाम से जोड़कर समूची शासन-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष चलाने का बिन्दु हमेशा से समझौतावादी धारा और क्रांतिकारी धारा का विभाजन बिन्दु रहा है। ...और हमेशा की तरह इस आन्दोलन में भी ईरान की बहुसंख्यक छात्र आबादी ने इस सही और जुझारू क्रांतिकारी रास्ते का ही साथ दिया।

को बताता है।

मेक्सिको के छात्र आन्दोलन ने गुजरी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, 1910 में, हुई मेक्सिको की क्रांति की यादें ताजा कर दी हैं, जब मेक्सिकन जनता ने अपने जनवादी अधिकारों को हासिल करने के लिए राजनीतिक-सामाजिक क्रांति की थी। आज जब राष्ट्रपति जेडिलो के नेतृत्व में मेक्सिको का शासक वर्ग नयी आर्थिक नीतियों के द्वारा आम जनता के रहे-सहे जनवादी अधिकारों व राजकीय सहायता को छीनने की कोशिश कर रहा है, तो मेक्सिको की मेहनतकश आम जनता के साथ ही अब आम छात्रों ने भी सशक्त विरोध कर 1910 की क्रांति के नये संस्करण की तैयारी शुरू कर दी है। सरकार की नयी आर्थिक नीतियों से तबाह व असंतुष्ट आम आबादी सही समाधान की तलाश में पुरानी मान्यताओं को तोड़ रही है— बिजली उद्योग के निजीकरण के खिलाफ सैकड़ों बिजली कर्मचारियों द्वारा सड़कों पर किया गया मार्च, पहाड़ों में चल रही गुरिल्ला कार्रवाइयां, चियापास प्रान्त में किसानों द्वारा हो रहा सशस्त्र संघर्ष — इन सबके बीच नयी युवा पीढ़ी अपने अधिकारों के संघर्ष के लिए राजनीतिक परिदृश्य पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। शासक वर्ग उनके दृढ़ निश्चय से भयभीत है कि उनका संघर्ष समाज के अन्य क्षेत्रों में भी फैल सकता है। हड़तालीं छात्र दो बसों में भरकर चियापास में संघर्षरत लोगों को समर्थन देने के लिए भी गये थे। मेक्सिको की सरकार और उनके साम्राज्यवादी आका ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठे हुए हैं और विद्रोही आबादी से भयभीत हैं। जैसे-जैसे इस वर्ष के आगामी चुनाव नजदीक आ रहे है, वैसे-वैसे आम जनता के दिमाग में एक ही बात आ रही है कि **''अपना दमन करवाने के लिए हम किस पार्टी को चुनें ?''**

मेक्सिको के छात्रों के इस आन्दोलन को महाद्वीप के अन्य भागों से भी समर्थन मिल रहा है। अमेरिका के एक क्रान्तिकारी संगठन 'लिब्रोस रिवोल्यूशन' ने इस आन्दोलन के समर्थन में लास एंजिल्स में पर्चा भी बांटा। जिसमें इस आन्दोलन का समर्थन करने, साम्राज्यवाद तथा उसके पिठ्ठुओं का विरोध करने, बैनर-समर्थन संदेश-पत्र आदि भेजने की अपील की गयी है।

दमन भी जारी है और प्रतिरोध भी

आन्दोलन को दबाने-कुचलने के प्रयास भी कम नहीं किये गये। 21 मई 1999 को हड़तालीं छात्रों से अपनी मांगों के समर्थन में सड़कों पर एक बार फिर मार्च किया। अगस्त 1999 में प्रदर्शन के दौरान छात्रों की पुलिस से झड़प भी हो गयी। मेक्सिको सिटी के मेयर कार्डीनास ने पुलिस द्वारा छात्रों के पीटे जाने और गिरफ्तार करने को उचित ठहराया तथा यह कहा कि ''जब जरूरत होगी पुलिस हस्तक्षेप करेगी।'' हड़तालीं छात्रों ने मेक्सिको के राष्ट्रपति जेडिलो, मेक्सिको सिटी के मेयर कार्डीनास, विश्वविद्यालय के अध्यक्ष (रेक्टर)

बार्नीस और पुलिस चीफ के खिलाफ नारे भी लगाये। यूनाम के संघर्षरत छात्रों के दमन-उत्पीड़न के खिलाफ हाल ही में हुए प्रदर्शन बैनर व पोस्टर इस सच्चाई को बता रहे थे-- ''कार्डीनासः दमनकारी''। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बार्नीस ने हड़ताल खत्म करवाने के लिए संघीय सरकार से हस्तक्षेप करने की अपील की है तथा राष्ट्रपति जेडिलो ने धमकी के अन्दाज में कहा कि ''समाधान के लिए सरकार **कोई अन्य** उपाय करेगी।'' जो, हड़ताल के प्रति शासन-प्रशासन की मंशा को बताता है।

तात्कालिक रूप से इस आन्दोलन का अंजाम चाहे जो हो, लेकिन इतना तय है कि सरकार यदि इस आन्दोलन को कुचलने का प्रयास करेगी तो उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। क्योंकि 2 अक्टूबर 1968 को मेक्सिको सिटी में हुए छात्रों के आन्दोलन में प्रशासन द्वारा किये गये जनसंहार की स्मृतियां लोगों के दिलों में अभी ताजा हैं और मेक्सिको के संघर्षशील नौजवानों का हौसला पस्त नहीं हुआ है बल्कि उनके पूर्वजों की शहादतें उनको संघर्ष के लिए प्रेरित कर रही है और इस बात को प्रामणित कर रही हैं कि विद्रोह को कुचला जा सकता है लेकिन विचारों को नहीं ।

एफ अर्से से खदबदा रहा था आक्रोश

ऐसा नहीं है कि यूनाम के छात्रों का आन्दोलन अचानक उठ खड़ा हुआ है। उसके पीछे कुछ निश्चित कारण रहे हैं, जो मेक्सिको की अर्थव्यवस्था के संकट की घनीभूत अभिव्यक्ति हैं। इन संकटों की शुरुआत उस समय हुई जब 1982 में मेक्सिको की सरकार ने आइ.एम.एफ. से नये कर्ज लेने के लिए मेक्सिको की मुद्रा पीसो के भारी अवमूल्यन और ''मुक्त'' व्यापार करने की शर्तों को मानकर पूरी अर्थव्यवस्था पर से नियंत्रण हटा लिया। 1984 से 1994 तक दस वर्षों में मेक्सिको की प्रति व्यक्ति आय 16 प्रतिशत और वास्तविक मजदूरी 40 प्रतिशत कम हो गयी। अमीरी-गरीबी की खाई तेजी से बढ़ी, मुट्ठी भर 10 प्रतिशत अमीर आबादी की आय में 22.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि 10 प्रतिशत सबसे गरीब आबादी की आय में 22.3 प्रतिशत की कमी हो गयी। 1994 में पीसो का भारी अवमूल्यन हुआ और 1 जनवरी 1994 को मेक्सिको की सरकार द्वारा उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार संधि (NAFTA) में शामिल होने के बाद अर्थव्यवस्था पर बचे-खुचे सरकारी नियंत्रण को समाप्त कर शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के मद में भारी कटौती की गयी। बाजार अमेरिकी मालों से भर गये, देशी उद्योग तबाह होने लगे, बेरोजगारी तेजी से बढ़ने लगी, मजदूरों अधिकारों को एक-एक करके छीना जाने लगा। अर्थव्यवस्था के संकटग्रस्त होने के साथ ही पूंजीवादी जनतंत्र का क्रूर चेहरा भी बेनकाब हो गया और जनान्दोलनों को कुचलने-दबाने की शुरुआत हुई।

मेक्सिको के आइने में दिखती हमारे देश की तस्वीर

मेक्सिको में यूनाम के छात्रों का आन्दोलन उन सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध व्याप्त असंतोष को बताता है जो अब खुले तौर सामने आ गया है। जिसके हिरावल आम छात्र-नौजवान हैं, जो समाज के अन्य मेहनतकश वर्गों के आन्दोलन के साथ अपने आन्दोलन को जोड़ रहे हैं। यूनाम के छात्रों के आन्दोलन में स्वतःस्फूर्तता का पहलू बेहद कम बल्कि सचेतनता का पहलू ज्यादा है। छात्र-मजदूर एकता का नारों और व्यावहारिक कार्रवाइयों में प्रतिबिम्बन यह दर्शाता है कि मेक्सिको के छात्र-युवा आन्दोलन की विचारधारात्मक दिशा स्पष्ट है। आन्दोलन की दिशा यह बताती है कि पूरे देश के पैमाने पर एक क्रान्तिकारी पार्टी के गठन और उसके नेतृत्व में विभिन्न संघर्षरत तबकों की एकजुट लड़ाई की मंजिल बहुत दूर नहीं। ऐसा लगता है कि साम्राज्यवाद को आखिरी जोरदार धक्का लैटिन अमेरिका की जमीन से मिलेगा क्योंकि मेक्सिको भूमण्डलीकरण की सबसे बुरी मार झेलने वाले देशों में से एक है और जहां दमन है वहां प्रतिरोध भी है। चे-ग्वेवारा की विद्रोही आत्मा आज भी लैटिन अमेरिकी युवाओं की आत्माओं को आलोड़ित कर रही हैं।

हमारे देश के छात्र-नौजवान अभी मेक्सिको के अपने भाइयों से काफी पीछे हैं, जबकि उन्हीं नीतियों का कहर यहां भी जारी है जिनके खिलाफ मेक्सिको के छात्रों ने बगावत की है। लेकिन देर-सबेर यह होना ही है क्योंकि अपने देश में नयी आर्थिक नीतियों के दूसरे आक्रामक दौर में भाजपा सरकार ने शिक्षा का बाजारीकरण कर उसे पूरी तरह अमीरों की बपौती बना देने की गति को तेज कर दिया है। बेरोजगारी बढ़ रही है और उनसे उत्पन्न अवश्यम्भावी छात्र-युवा असंतोष से निपटने के लिए शासन-व्यवस्था अपना दमनतंत्र चाक-चौबन्द कर रही है।

अपने देश के नौजवानों को धैर्यवान और सर्वसहा होने के मिथक को एक झटके से तोड़कर आगे आना होगा। यह इतिहास का पैगाम है, जिसे मेक्सिको के विद्रोही छात्रों ने सुन लिया है - हम कब सुनेंगे? क्या मेक्सिको के आईने में हम अपने देश का भविष्य नहीं देख रहे हैं? नयी सदी में इसका जवाब देश के छात्रयुवा अवश्य देंगे। सवाल सिर्फ यह हो सकता है कि कब और कितनी देर बाद। जितनी जल्दी यह आवाज सुनी जाएगी, उतनी जल्दी हम उन सपनों की दुनिया बनाने की ओर बढ़ेंगे - जो पिछली शताब्दी में भगतसिंह और उनके साथियों ने संजोए थे। ●

क्रान्तिकारी नौजवान की कसौटी

''कोई नौजवान क्रान्तिकारी है अथवा नहीं, यह जानने की कसौटी क्या है ? ... इसकी कसौटी केवल एक है, यानी यह देखना चाहिए कि वह व्यापक मजदूर-किसान जन-समुदाय के साथ घुलमिल कर एक हो जाना चाहता है अथवा नहीं ? क्रान्तिकारी वह है जो मजदूरों और किसानों के साथ घुलमिलकर एक हो जाता हो, वरना वह क्रान्तिकारी नहीं है या प्रतिक्रान्तिकारी है।''

● *माओ त्से-तुङ.*